2026 Volume: 02 Issue: 01 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-06

प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद: सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना का कथा-संगम

*[1]रिचा सिंह [2] डॉ॰ पवन कुमार सिंह

[1]शोध छात्रा [2]आचार्य हिन्दी विभाग

एम. ए. (हिन्दी) नेट.जे.आर.एफ. के ॰ एस ॰ साकेत पी॰ जी॰ कॉलेज अयोध्या के॰ एस ॰ साकेत पी॰ जी॰ कॉलेज अयोध्या

Received: 25 November 2025
Article Revised: 15 December 2025
Published on: 05 January 2026

***Corresponding Author: रिचा सिंह**
शोध छात्रा एम. ए. (हिन्दी) नेट.जे.आर.एफ. के ॰ एस ॰ साकेत पी॰ जी॰ कॉलेज अयोध्या के॰ एस ॰ साकेत पी॰ जी॰ कॉलेज अयोध्या.

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.6008

सार (ABSTRACT)

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद वह महत्वपूर्ण कथाकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज के विविध आयामों का सूक्ष्म एवं व्यापक चित्रण किया। यह शोध-लेख प्रेमचंद के कथा-साहित्य में आदर्श और यथार्थ के पारस्परिक संबंध, ग्रामीण एवं दलित जीवन के यथार्थ चित्रण, गांधीवादी प्रभाव, सामाजिक संदर्भों और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। लेख से स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद का यथार्थवाद मात्र वस्तु-चित्रण नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना और सामाजिक न्याय की आकांक्षा से संपृक्त आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है।

मुख्य शब्द(KEYWORDS): प्रेमचंद, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, सामाजिक यथार्थ, गाँधीवाद।

प्रस्तावना (INTRODUCTION)

आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य को जिस सुदृढ़ आधार की आवश्यकता थी, उसे प्रेमचंद ने स्थापित किया। 1916 से 1936 तक के दो दशकों में उन्होंने न केवल कहानी और उपन्यास की संरचना को परिभाषित किया, बल्कि साहित्य के सामाजिक उद्देश्य को भी नई दिशा दी। साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का उपकरण मानने वाली उनकी दृष्टि उन्हें केवल 'कहानीकार' नहीं, बल्कि एक युग-निर्माता साहित्यकार के रूप में स्थापित करती है। प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन में उनके द्वारा कही गई पंक्ति—

"साहित्य समाज के आगे चलने वाली मशाल है"—

उनके साहित्यिक दर्शन को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

प्रेमचंद का कथा-लोक आरंभिक उर्दू लेखन से विकसित होकर हिंदी में 'प्रेमचंद युग' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। उनकी लगभग 300 कहानियाँ 'मानसरोवर' में संग्रहीत हैं, जिनमें उनका साहित्यिक विकास और दृष्टि का विस्तार स्पष्ट देखा जा सकता है।

1. प्रेमचंद का साहित्यिक व्यक्तित्व और सामाजिक दृष्टि

प्रेमचंद का साहित्य उनके व्यक्तिगत जीवनानुभव और सामाजिक परिवेश का प्रतिफल है। गरीबी, अभाव, संघर्ष और सामाजिक विषमता के वातावरण में जन्म लेने के कारण उन्होंने प्रारंभ से ही जीवन की कठोर वास्तविकताओं का अनुभव किया। यही अनुभव उनकी कहानियों में नायक, खलनायक और परिस्थितियों के रूप में रूपांतरित होता है।

उनकी सामाजिक दृष्टि के मुख्य तत्व हैं—

1. **मनुष्य और समाज के पारस्परिक संबंध**
2. **श्रम, किसान और मजदूर वर्ग की समस्याएँ**
3. **जातिगत असमानता और सामाजिक बहिष्कार**
4. **स्त्री-जीवन की दमनकारी संरचनाएँ**
5. **नैतिक मूल्यों और मानवता का संरक्षण**

प्रेमचंद ने साहित्य में अभिजात वर्ग के स्थान पर सामान्य जन को स्थापित किया। यह उनके लोकतांत्रिक और संवेदनात्मक दृष्कोण का प्रमाण है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने प्रेमचंद को "लोकजीवन का सर्वश्रेष्ठ कथाकार" कहा, जो उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

2. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का सिद्धांत

प्रेमचंद के कथा-साहित्य में आदर्श और यथार्थ एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक तत्व के रूप में उपस्थित हैं। वे वस्तुओं और जीवन को जैसी स्थिति में है, वैसा चित्रित अवश्य करते हैं, किंतु निराशावादी यथार्थवाद के पक्षधर नहीं हैं।

वे लिखते हैं—

"सबसे उत्तम कहानी वह है, जिसका आधार मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।"

मनोवैज्ञानिक सत्य का यह आग्रह उन्हें चरित्र-चित्रण में यथार्थ की गहराई और आदर्श की ऊँचाई, दोनों प्रदान करता है।

उनका मानना था कि—

"यथार्थवाद आंखें खोलता है, आदर्शवाद हमें ऊँचे स्थान पर पहुँचा देता है।"

इसलिए उनकी कहानियों में जीवन की कठोर वास्तविकताओं के बावजूद मानवीय मूल्यों की आस्था और सुधार की संभावनाएँ सदैव विद्यमान रहती हैं।

3. गांधीवादी प्रभाव और हृदय-परिवर्तन की परंपरा

प्रेमचंद के साहित्य में गांधीवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है, विशेषकर—

- सत्य
- अहिंसा
- त्याग
- स्वदेशी
- सामाजिक सद्भाव
- छुआछूत विरोध
- नैतिक परिवर्तन

उनकी जिन कहानियों में गांधीवादी प्रभाव प्रत्यक्ष है, उनमें प्रमुख हैं—

'सज्जनता का दंड', 'पंच परमेश्वर', 'नमक का दारोगा', 'कातिल', 'कातिल की माँ' आदि।

'कातिल की माँ' में प्रेमचंद लोकतांत्रिक और मानवीय नैतिकता का संदेश देते हैं—

"जो स्वराज खून से मिलेगा, वह खून ही कायम करेगा।"

यह कथन इस बात का संकेत है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक लक्ष्य नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक परिवर्तन का भी मार्ग है।

नामवर सिंह ने प्रेमचंद को **"जनजीवन की राष्ट्रीय गाथा का सबसे बड़ा कथाकार"** कहा है।

4. ग्रामीण जीवन, दलित यथार्थ और वर्ग-संघर्ष

प्रेमचंद का ग्रामीण चित्रण मात्र रोमांटिक या भावुक नहीं है। वे गाँव की सुंदरता को स्वीकारते हुए उसकी सामाजिक-आर्थिक विषमता का यथार्थ पाठकों के सामने रखते हैं।

उनकी अनेक कहानियाँ—

- **सवा सेर गेहूँ**
- **सद्गति**
- **दूध का दाम**
- **ठाकुर का कुआँ**
- **पूस की रात**

- **कफन**

उस समय के किसान, मजदूर, दलित और गरीब वर्ग के शोषण, गरीबी और असमानता को अत्यंत मार्मिकता से उजागर करती हैं।

'कफन' में घीसू और माधव की संवेदनहीनता दरअसल उस व्यवस्था की त्रासदी है जिसने मनुष्य से उसके श्रम का अर्थ, परिवार का संबंध और मनुष्यता की गरिमा सब छीन ली है।

रामविलास शर्मा लिखते हैं—

"प्रेमचंद गरीबी को आदर्श नहीं बनाते, वे दिखाते हैं कि अंधकार में भी मनुष्यता का दीप कैसे जलता है।"

इस प्रकार उनका यथार्थवाद मात्र सामाजिक कुरूपता का चित्रण नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की खोज का माध्यम है।

5. प्रेमचंद का कथा-शिल्प और मनोवैज्ञानिक संवेदना

प्रेमचंद की कहानी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी भाषा की सरलता, कथानक की सघनता और चरित्रों की मनोवैज्ञानिक प्रामाणिकता है।

- उनकी कहानियों की शुरुआत प्रायः लोक-कथा जैसी सरल होती है।
- वे परिवेश, परिस्थिति और चरित्रों के मनोभावों का अत्यंत स्वाभाविक चित्रण करते हैं।
- उनकी भाषा लोक के अनुभव से विकसित संवेदनात्मक भाषा है।

इसलिए पाठक को उनकी कहानियाँ अपने आसपास की घटनाओं का जीवंत अनुभव कराती हैं।

6. प्रेमचंद का साहित्य और सामाजिक सरोकार

प्रेमचंद के कथा-साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे मनुष्य के भीतर की नैतिक शक्ति और सुधार की संभावना में विश्वास करते हैं। उनका आदर्शवाद किसी काल्पनिक आदर्शलोक नहीं, बल्कि यथार्थ जीवन की परिस्थितियों में विकसित मानवीय मूल्यों का वास्तविक दर्शन है।

उनकी दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य है—

- मानवता का संवर्धन
- सामाजिक न्याय की स्थापना
- आर्थिक-सामाजिक असमानता के विरुद्ध आवाज़
- शोषित वर्ग की पीड़ा का प्रतिनिधित्व
- राष्ट्रीय चेतना का विकास

इसलिए उनका साहित्य केवल मनोरंजन या कल्पना नहीं, बल्कि समाज-सुधार और मानवीय उत्थान का दस्तावेज है।

प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ

हिंदी–उर्दू साहित्य में प्रेमचंद को सामाजिक यथार्थवाद का सशक्त प्रतिनिधि माना जाता है। उनका साहित्य कल्पना-विलास नहीं, बल्कि अपने समय के भारतीय समाज का जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने औपनिवेशिक भारत की सामाजिक, आर्थिक और नैतिक विडंबनाओं को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थपरक दृष्टि से प्रस्तुत किया।

1. किसान जीवन और शोषण

प्रेमचंद के साहित्य का केंद्रीय विषय किसान है। गोदान में होरी का चरित्र किसानों की दयनीय स्थिति, ज़मींदारी शोषण, महाजनी अत्याचार और ऋण-चक्र की त्रासदी को उजागर करता है। किसान मेहनतकश होते हुए भी सम्मानजनक जीवन से वंचित है—यह सामाजिक यथार्थ प्रेमचंद की रचनाओं में बार-बार उभरता है।

2. वर्ग संघर्ष और आर्थिक विषमता

प्रेमचंद समाज को वर्गीय दृष्टि से देखते हैं। कफन में घीसू और माधव की निर्धनता केवल आलस्य नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था की क्रूरता का परिणाम है। अमीर–गरीब की खाई, श्रमिकों का शोषण और पूंजीवादी मानसिकता उनके यथार्थवाद का प्रमुख पक्ष है।

3. नारी की स्थिति

प्रेमचंद ने स्त्री को करुणा का पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक पीड़ा की सशक्त प्रतीक के रूप में चित्रित किया। निर्मला में दहेज प्रथा और असमान विवाह से उत्पन्न त्रासदी, सेवासदन में नारी-शोषण और सामाजिक पाखंड का यथार्थ सामने आता है। वे स्त्री की स्वतंत्रता और गरिमा के पक्षधर हैं।

4. जाति व्यवस्था और सामाजिक असमानता

प्रेमचंद की रचनाओं में जातिवाद का तीखा विरोध मिलता है। ठाकुर का कुआँ और सद्गति जैसी कहानियाँ अस्पृश्यता और अमानवीय व्यवहार का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती हैं। वे जाति-व्यवस्था को मानवता के विरुद्ध मानते हैं।

5. नैतिक मूल्यों का क्षरण

प्रेमचंद के समय समाज नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा था। स्वार्थ, दिखावा और पाखंड सामाजिक संबंधों को खोखला कर रहे थे। पंच परमेश्वर और ईदगाह जैसी कहानियाँ मानवीय मूल्यों, न्याय और संवेदना की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

6. राष्ट्रवाद और सामाजिक चेतना

प्रेमचंद का यथार्थ केवल सामाजिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय भी है। वे राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ सामाजिक सुधार को अनिवार्य मानते हैं। उनका साहित्य जनचेतना जगाने का माध्यम बनता है।

प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ मानवीय संवेदना, करुणा और सुधारवादी दृष्टि से युक्त है। उन्होंने समाज की कुरूपताओं को निर्भीकता से उजागर किया और शोषित वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है और समाज को आत्मावलोकन के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद का साहित्य हिंदी कथा-परंपरा में आदर्शवाद और यथार्थवाद के संतुलित संश्लेषण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। उन्होंने न केवल भारतीय समाज के दैनंदिन संघर्षों का यथार्थात्मक चित्रण किया, बल्कि मनुष्य के भीतर छिपी सद्भावना, नैतिकता और परिवर्तन की क्षमता पर विश्वास भी व्यक्त किया।

उनकी कहानियाँ सामाजिक शोषण, गरीबी, जातिगत विषमता और आर्थिक असमानता जैसी कठोर वास्तविकताओं को सामने लाती हैं, परंतु साथ ही मानवता, संवेदना और नैतिक आदर्शों के दीप को भी जलाए रखती हैं।

प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वह समाज को यथार्थ की कठोरता दिखाते हुए भी मानव-जीवन की गरिमा और सुधार की संभावनाओं को पुनर्स्थापित करता है। उनके साहित्य में जीवन का सत्य भी है और जीवन का आदर्श भी—और यही उन्हें वैश्विक साहित्यकार के रूप में विशिष्ट बनाता है।

संदर्भ सूची

प्रेमचंद द्वारा लिखित कृतियाँ

1. प्रेमचंद. मानसरोवर (खंड 1–8). सरस्वती प्रेस, वाराणसी.
2. प्रेमचंद. कफ़न और अन्य कहानियाँ. सरस्वती प्रेस, 1947.
3. प्रेमचंद. प्रेमचंद रचनावली (खंड 1–20). लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

प्रेमचंद पर प्रमुख आलोचना ग्रंथ

4. शर्मा, रामविलास. प्रेमचंद और उनका युग. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिंदी साहित्य का इतिहास. राजकमल प्रकाशन.
6. नामवर सिंह. कहानी नई कहानी. ज्ञानपीठ प्रकाशन.
7. सिंह, नामवर. हिंदी साहित्य की परंपरा और प्रेमचंद. राजपाल एंड सन्स.

8. लाल, गोपाल. प्रेमचंद का समाज-दर्शन. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

9. दुबे, सूर्यदेव. प्रेमचंद: एक आलोचनात्मक अध्ययन. ओरिएंट ब्लैकस्वान.

10. नंदकुमार, माया. प्रेमचंद: दृष्टि और यथार्थ. किताब महल पब्लिशर्स.